गधा और ऊदबिलाव

मक्सिम गोर्की
सेर्गेई मिखाल्कोव

गधा और ऊदबिलाव

मक्सिम गोर्की
सेर्गेई मिखाल्कोव

हिन्दी रूपान्तर : नमिता
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 20.00 रुपये

प्रथम संस्करण : जनवरी 2008

पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी–68, निरालानगर

लखनऊ–226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस–28, शक्तिनगर, लखनऊ

गधा और ऊदबिलाव

सेर्गेई मिखाल्कोव

एक बार की बात है, जंगल के बीचोबीच गलियारे में एक बहुत प्यारा नन्हा पेड़ था।

एक दिन एक गधा दौड़ता हुआ उस जंगली रास्ते पर आया; लेकिन जब वह दूसरी ओर देख रहा था, उसी समय पेड़ से टकरा गया; और उसे इतनी तेज चोट लगी कि दिन में तारे नज़र आने लगे।

गधे को बहुत गुस्सा आया। वह नदी की ओर गया और बाहर से ऊदबिलाव को, जिसे वह पहले से जानता था, पुकारने लगा–

"मैं पूछता हूँ, ऊदबिलाव! क्या तुम जंगल की उस जगह को जानते हो, जिसके बीचोबीच एक पेड़ लगा हुआ है।"

"हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ!"

"तो तुम मेरा एक काम कर दो–जाओ और उस पेड़ को गिरा दो–तुम्हारे पास तो बहुत नुकीले दाँत हैं।"

"लेकिन तुम इस धरती पर किसलिए हो?"

"मेरा सिर उससे टकरा गया, देखो यह गूमड़—कितना बड़ा-सा है?"

"तुम्हारी नज़रें कहाँ थीं?"

"कहाँ? कहाँ थी मतलब? मैं दूसरी ओर देख रहा था! मेहरबानी करके जाओ और पेड़ को काट डालो!"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता। जंगली रास्ते में वह बहुत अच्छा लगता है।"

"लेकिन वह मेरे रास्ते में आया। मेरे लिए उसे काट डालो, ऊदबिलाव!"

"नहीं, मैं नहीं काटूँगा!"

"ये क्या बात हुई; क्या यह तुम्हारे लिए बहुत कठिन है?"

"नहीं, पर मैं ऐसा नहीं करूँगा, चाहे तुम कुछ भी कहो!"

"क्यों नहीं करोगे?"

"क्योंकि अगर मैंने ऐसा कर भी दिया, तो तुम किसी झाड़ी से टकरा जाओगे!"

"तो तुम झाड़ी को उखाड़ देना।"

"अगर मैंने ऐसा भी कर दिया तो तुम किसी गड्ढे में गिर जाओगे और अपनी टाँगें तुड़वा लोगे।"

"मैं क्यों ऐसा करूँगा?"

"क्योंकि तुम एक गधे हो।" ऊदबिलाव ने कहा।

अपशकुन

सेर्गेई मिखाल्कोव

एक बार की बात है, एक काली बिल्ली थी—बिल्कुल काली, जितनी वह हो सकती थी। बिल्ली बहुत अच्छी शिकारी थी। एक दिन उसने एक चूहा पकड़ा और एक दिन मछली। एक सुबह जब वह शिकार मारकर वापस लौट रही थी, तो रास्ते में उसकी मुलाकात एक कुत्ते के पिल्ले से हुई।

"बिल्ली-बिल्ली! मुझे भी अपने साथ शिकार पर ले चलो!"

"ठीक है," बिल्ली सहमत हो गयी। "एक से भले दो!"

"अच्छा!" पिल्ले ने कहा, "मुझे आगे-आगे दौड़ने देना, जिससे तुम मेरा रास्ता नहीं काट पाओगी और मेरे साथ कुछ बुरा भी नहीं होगा। आखिरकार, तुम एक बिल्ली हो, हो कि नहीं? और वह भी एकदम काली!"

"अब मैं तुम्हें कहीं नहीं ले जाऊँगी!" बिल्ली ने कहा।

"क्यों?" पिल्ले ने पूछा।

"एक चालाक से हारना कहीं बेहतर है, बजाय इसके कि एक मूर्ख के साथ मिलकर कुछ पा लिया जाय। तुम चरम मूर्ख हो, यह स्पष्ट है!" बिल्ली ने कहा और वहाँ से चली गयी।

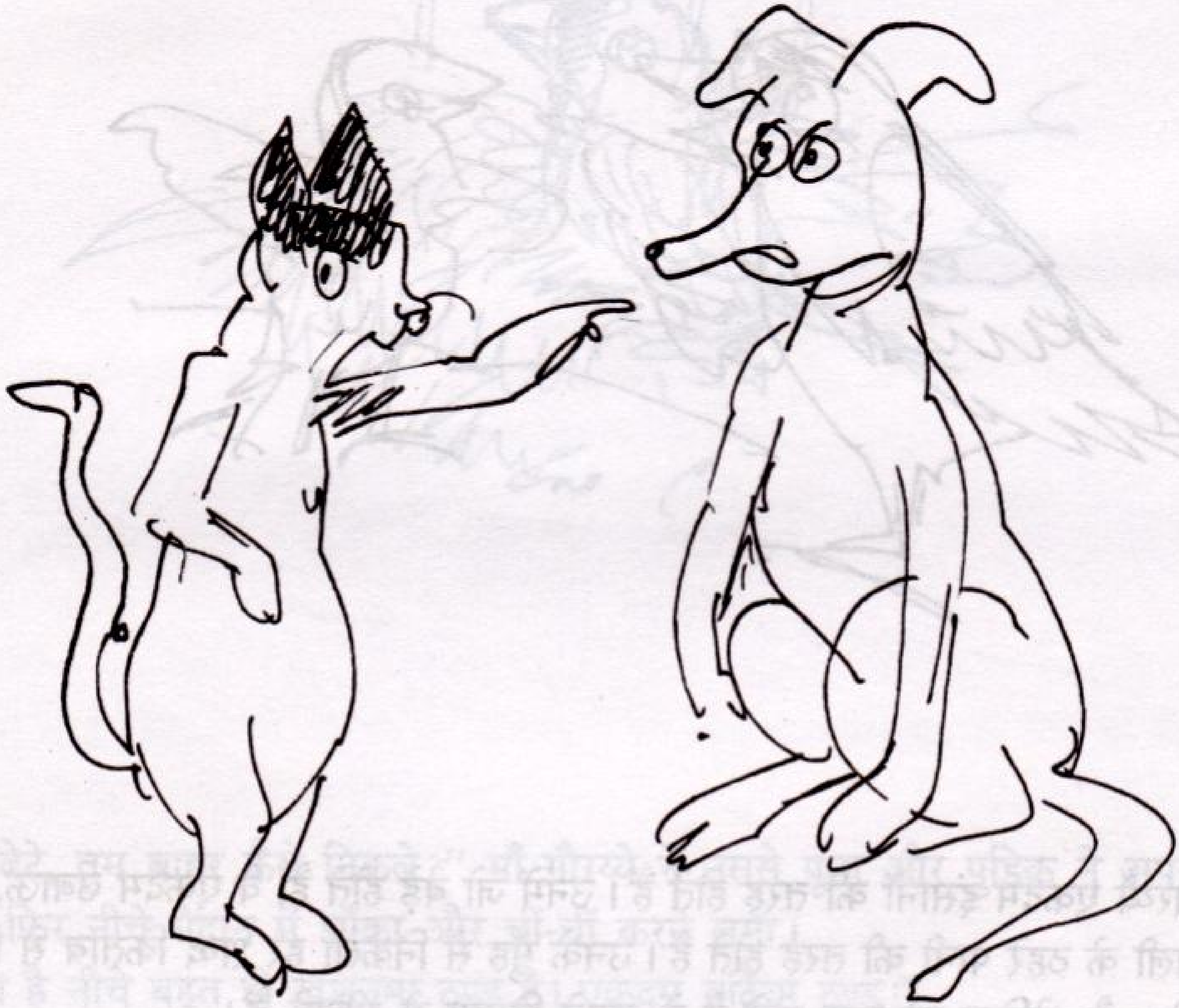

छोटा गौरय्या

मक्सिम गोर्की

गौरय्ये एकदम इंसानों की तरह होते हैं। उनमें जो बड़े होते हैं, वे एकदम उबाऊ, नीरस और नाली के ठहरे पानी की तरह होते हैं। उनके मुँह से निकला हर शब्द किताब से निकला हुआ होता है; लेकिन जो युवा होते हैं वे अपने दिमाग से सोचते हैं।

एक बार की बात है एक छोटा गौरय्या रहता था और उसका नाम पुडिक था। वह स्नानघर की खिड़की के ऊपर मोटे सन के एक बढ़िया, गरम घोंसले में रहता था, जो काई और दूसरे मुलायम सामानों से बना था। उसने अभी तक उड़ने की कोशिश नहीं की थी, लेकिन अपने छोटे से पंखों को फड़फड़ाता रहता था और अपना सिर घोंसले से बाहर निकालता रहता था। वह यह जानने के लिए बहुत ही बेचैन था कि बाहर की दुनिया कैसी है और क्या वह उसके लिए पर्याप्त अच्छी है?

"क्यों बेटे, तुम बाहर कैसे निकले?" माँ गौरय्ये ने उससे पूछा और पुडिक ने अपने पंख हिलाये फिर नीचे मैदान में झाँका और चीं-चीं करने लगा।

"लगता है नीचे बहुत ही खुशनुमा ठण्ड है! एकदम बढ़िया ठण्ड!"

फिर पापा गौरय्या उसके खाने के लिए कुछ कीड़े लेकर घर आये और डींग हाँकने लगे।

"मैं इस घर का मालिक हूँ! मैं मालिक हूँ!" और माँ गौरय्या उसके समर्थन में चहचहाने लगी : "जी मालिक! जी मालिक!"

लेकिन पुडिक कीड़े को निगलता जा रहा था और अपने आप से कह रहा था : "वे तुम्हें चबाने के लिए कीड़े दे देते हैं और इसके बारे में कुछ भी करने से रोकते हैं।"

और उसने घोंसले से बाहर सिर निकालकर चारों ओर देखना जारी रखा।

"अरे बेटे! सुनो!" उसकी माँ ने उससे चीं-चीं करते हुए कहा। "ध्यान रहे तुम बाहर मत गिर जाना!"

"छोड़ो भी! मैं कैसे गिर सकता हूँ?" पुडिक ने कहा।

"तुम गिर जाओगे और अगर वहाँ पहले से ही बिल्ली हुई तो वह तुम्हें निगल जाएगी।" उसके पिता ने शिकार पर जाने से पहले उसे समझाया।

और इस तरह दिन बीतते जा रहे थे, लेकिन पुडिक के पंख जल्दी बढ़ ही नहीं रहे थे।

एक दिन अचानक तेज हवा चली।

"चीं-चीं! यह क्या हैं?" पुडिक जानना चाह रहा था।

"यह हवा है," माँ ने उसे बताया। "और यह तुम्हें घोंसले से बाहर फेंक सकती है। फिर अफसोस, नीचे तुम बिल्ली के पास चले जाओगे!"

पुडिक को वह आवाज अच्छी नहीं लग रही थी, इसलिए उसने कहा :

"पेड़ इस तरह झूम क्यों रहे हैं? चलों उन्हें झूमने से रोकें, फिर वहाँ कोई हवा नहीं रहेगी।"

उसकी माँ ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि यह काम नहीं किया जा सकता है, लेकिन उसे विश्वास नहीं हो रहा था। हर चीज के बारे में उसकी अपनी एक अलग समझ थी।

एक आदमी स्नानघर के पास से गुजरा, उसके हाथ लटके हुए थे।

"जरूर उसके पंख को बिल्ली ने खा लिया होगा", पुडिक ने चीं-चीं करते हुए कहा। "केवल हड्डी ही बची है।"

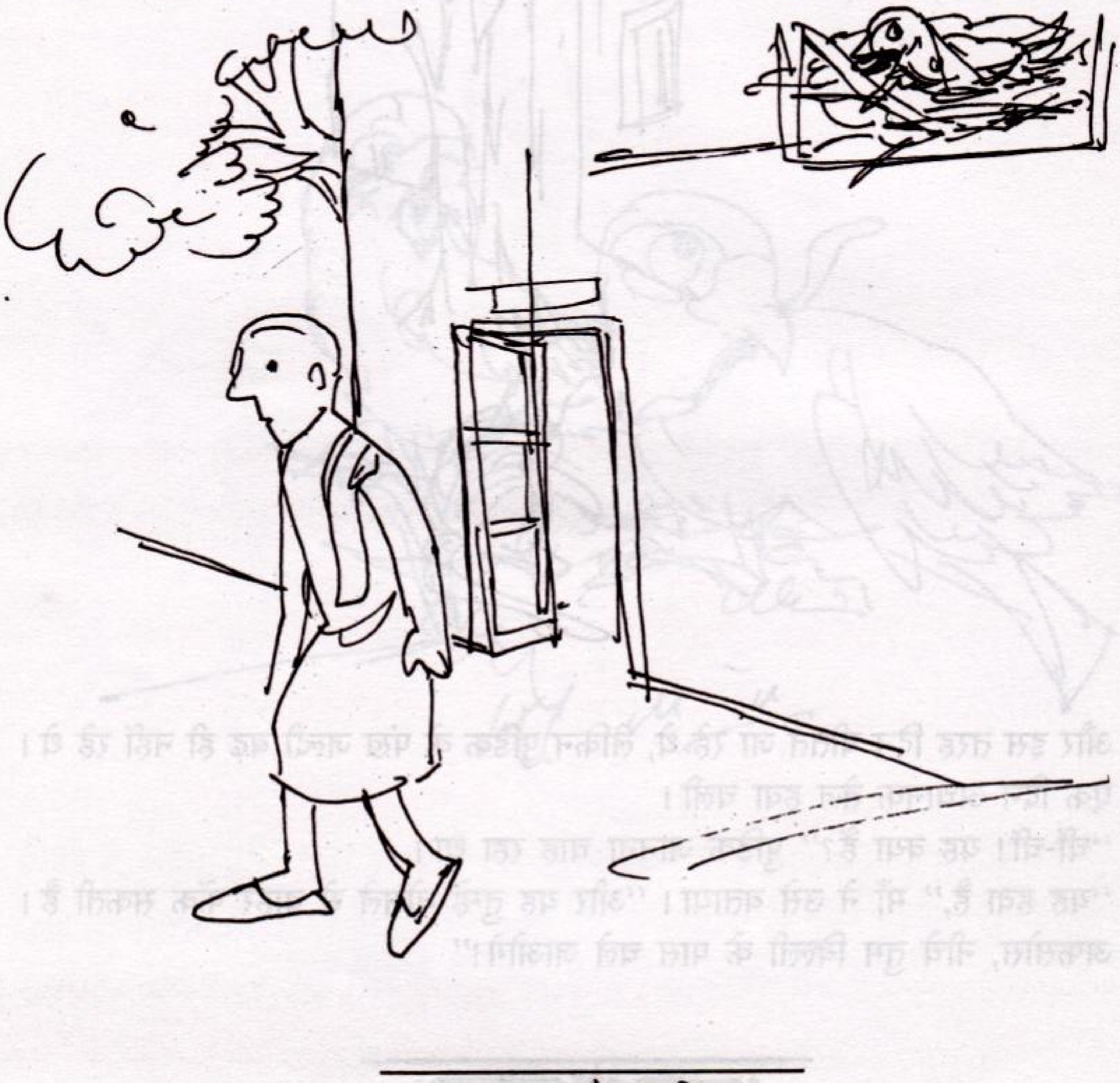

"वह आदमी है, उसके पंख नहीं होते!" उसकी माँ ने कहा। "उनका यही काम है, बिना पंखों के जीना। वे अपने दो पैरों से फुदक सकते हैं, समझे?"

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि अगर उनके पंख होते तो वे हमारे पीछे आते, जैसे मैं और पापा कीड़ों के पीछे जाते हैं।"

"हुँह!" पुडिक ने उपेक्षा से कहा। "हर किसी के पास पंख होना चाहिए। ज़मीन पर रहने में उतना मजा कहाँ, जितना हवा में रहने में! जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मैं चाहता हूँ कि हर कोई उड़ सके!"

इस तरह पुडिक को अपनी माँ की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। यह समझने के लिए वह अभी बहुत छोटा था कि अगर उसने अपनी माँ की बातें नहीं मानीं तो कुछ गड़बड़ भी हो सकती है।

फिर वह घोंसले के एकदम किनारे चला गया और चीं-चीं कर गाने लगा, जिसे उसने खुद बनाया था।

फिर उसके पीछे-पीछे माँ भी आ गयी। वह अपने पंख खो चुकी थी, फिर भी बहुत खुश थी। उसने पुडिक के सिर पर हल्के से थपकी देते हुए कहा : "क्यों, कैसी रही?"

"कैसी रही क्या? एक बार में ही कोई हर चीज़ थोड़े सीख सकता है।" पुडिक ने कहा।

और बिल्ली मैदान में बैठी थी, उसने माँ गौरय्या के पंखों को अपने पंजे में उठाया, उसे देखा और बड़े ही अफसोस के साथ म्याऊँ करने लगी।

"मियाऊँ! कितना प्यारा, छोटा-सा गौरय्या! एकदम बिल्ली जैसा! मियाऊँ!"

तो अन्त तो बढ़िया ही रहा, अगर हम माँ गौरय्या के पंखों के नष्ट होने की बात को छोड़ दें!

• • •

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ